

# विश्व न्याय मन्दिर

2 जनवरी 2016

विश्व के बहाईयों को,

परम प्रिय मित्रों,

हम यह सम्बोधन आपको उस सम्मेलन से कर रहे हैं जहाँ पाँच दिनों से निरन्तर महाद्वीपीय सलाहकारों ने अगली विश्व योजना के निहितार्थों पर मनोयोग से विचार किया है। उनके अन्तर्दृष्टि पूर्ण परामर्श ने ज्ञान के उस प्रभावशाली भण्डार में निहित क्षमता निर्माण की उस प्रक्रिया का उपयोग किया, जो सम्पूर्ण विश्व के हजारों क्लस्टरों में अर्जित की जा रही है। सम्मेलन में साझा किये गये विभिन्न वृत्तांत 'महानतम नाम' के समुदाय की रचनात्मकता, दृढता एवं बढ़ती हुई योग्यताओं और सर्वोच्च रूप से, 'सर्वशक्तिशाली' की सम्पुष्टि पर उसकी निर्भरता के साक्ष्य हैं। संसार के सभी भागों के लोगों में समाज की रूग्णताओं के उपचार हेतु बहाउल्लाह द्वारा प्रदत्त औषधि की प्रभावोत्पादकता के प्रति सराहना में वृद्धि हो रही है।

स्थापना युग की प्रथम शताब्दी के पूर्ण होने से पूर्व, एक समय अन्तराल है जो मापातीत महत्व के दो दस्तावेजों से सम्बन्धित जयंतियों के मध्य फैला हुआ है। यह अब्दुल-बहा द्वारा दिव्य योजना की पातियों के प्रकटीकरण की शताब्दी से प्रारम्भ होता है, जब मित्र उस योजना के अनावृत होने के नये स्तर पर आगे बढ़ रहे हैं। यह समाप्त हो रहा है अब्दुल-बहा के स्वर्गारोहण के सौ वर्ष बीतने पर जिसका मास्टर की वसीयत तथा इच्छा पत्र ने अनुकरण किया। इन विचारों को मस्तिष्क में रखते हुए अपने विचार-विमर्शों की तैयारी करते हुए, महाद्वीपीय सलाहकारों ने विश्व न्याय मंदिर तथा अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्यों की अगुआई में मास्टर के आवास का भ्रमण किया, वह स्थान जहाँ दिव्य योजना की तीन पातियाँ प्रकट की गई थीं और जहाँ अब्दुल-बहा के स्वर्गारोहण के कुछ सप्ताह पश्चात उनकी वसीयत व इच्छापत्र को, चार महाद्वीपों के अनुयायियों के समक्ष, उच्चारण कर पढ़ा गया था। उस पवित्र आवास में, वर्तमान सम्मेलन की संध्या पर, इन दो अधिकारपत्रों से अनुच्छेदों को पढ़ा गया, जिन्हें शोगी एफ्रेन्दी ने समझाया था कि, इन्होंने धर्म के विस्तार तथा इसकी प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की प्रक्रियाओं को गति प्रदान की। बहाउल्लाह के प्रकाश को अधिक सुदूर तक फैलाने तथा 'उनकी' संस्थाओं की योग्यता को प्रबलित करने, ताकि वे उन चैनलों की तरह कार्य कर सकें जिनके द्वारा 'उनके' प्रतिज्ञापित आशीर्वाद मानवता तक पहुँच सकें, पर केन्द्रित पाँच दिवसों के विचार विमर्श की यह उपयुक्त प्रस्तावना थी।

आने वाली पाँच वर्षीय योजना के प्रावधान उस संदेश में निहित हैं जिसे हमने सम्मेलन के प्रथम दिवस सम्बोधित किया था और जिसे उसी समय सभी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को भेजा गया था। 'स्वामी' के प्रियजनों से जिस प्रकार के विशाल प्रयास की मांग की जायेगी, सलाहकारों द्वारा स्पष्ट रूप से पहचानी गई, परन्तु साथ ही उन्होंने बहाई विश्व की इस चुनौती का सामना करने की क्षमता में विश्वास जताया। पहले किसी भी समय में इस प्रकार के उत्तरदायित्व के बारे में गंभीरता से विचार नहीं किया जा सकता था, परन्तु वर्तमान योजना में हो रही प्राप्तियों को ध्यान में रखते हुए, सम्भावनाओं के क्षेत्र पहले से भी सर्वदा अधिक वृहद हो गये हैं। उन सूचनाओं से हमारे हृदय द्रवित हो गये जो सम्मेलन क" जारी किये गये हमारे संदेश के कुछ ही घंटों में प्राप्त होने लगे थे, कि किस प्रकार मित्र सभी प्रकार की दशाओं में साथ आकर उत्सुकता से इसकी विषयवस्तु से परिचित होने के लिये एक-दूसरे की मदद कर रहे थे। हम आशा करते हैं कि संदेश का अध्ययन तीव्रता से पूरे समुदाय में फैलेगा। इसी दौरान संस्थाएँ रिज़वान में इस योजना के सर्वाधिक पवित्र प्रारम्भ को सुनिश्चित करने के लिये, सारे आवश्यक प्रशासनिक तथा संघटनात्मक प्रबन्ध करेंगी।

तब उससे पहले, बचे हुए कुछ महीनों में, वर्तमान योजना का कार्य, विशेषकर विकास के नए कार्यक्रमों की स्थापना, निरंतर जारी रहेगी। इस दिशा में उठाया गया प्रत्येक कदम अगले पाँच वर्षीय उद्यम के लिए विश्वव्यापी समुदाय की तत्परता में वृद्धि करेगा। प्रत्येक पल अमूल्य है। हम लालायित हैं प्रत्येक अनुयायी को समर्पित सेवा और उच्च प्रयत्न के उस पथ का चयन करते हुए देखने को, जिस ओर अब्दुल-बहा ने मित्रों का दिव्य योजना की पातियों में बारम्बार आह्वान किया है। हमारी प्रार्थनाओं में हम आपकी ओर से, उस योजना के लेखक से याचना करेंगे कि वह अपने पिता के सिंहासन के समक्ष मध्यस्थता करें कि 'वे' आपकी सेवा में आपका मार्गदर्शन करें जब तक ऐसी आत्माएँ हैं जिन्हें स्वर्ग की रोटी की आवश्यकता है।

-विश्व न्याय मंदिर